अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) पारिणामिक भाव का भेद नहीं है-

(क) जीवत्व (ख) भव्यत्व

(ग) अभव्यत्व (घ) अजीवत्व ( )

(b) सान्निपातिक भाव में त्रिकसंयोगी भंग हैं-

(क) 10 (ख) 05

(ग) 01 (घ) 26 ( )

(c) देशविरति श्रावक गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव के भेद हैं-

(क) 19 (ख) 17

(ग) 15 (घ) 12 ( )

(d) अनुयोग द्वार सूत्र में मिश्र दृष्टि को अन्तर्गत माना है-

(क) क्षायिक भाव (ख) पारिणामिक भाव

(ग) क्षयोपशम भाव (घ) उपशम भाव ( )

(e) असुर कुमार देव की आहारेच्छा का जघन्य काल है-

(क) प्रतिसमय (ख) एक दिन

(ग) पृथकत्व दिवस (घ) 1 हजार वर्ष से कुछ अधिक समय ( )

(f) तीसरे देवलोक के देव की आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल है-

(क) 7 हजार वर्ष (ख) 2 हजार वर्ष

(ग) 10 हजार वर्ष (घ) 7 हजार वर्ष से कुछ अधिक ( )

(g) अपरीत में गुणस्थान है-

(क) पहला गुणस्थान (ख)1 से 4 गुणस्थान

(ग) 1 से 5 गुणस्थान (घ) 1 से 10 गुणस्थान ( )

(h) अचरम में उपयोग हैं-

(क) 06 (ख) 08

(ग) 04 (घ) 05 ( )

(I) चरम में जीव के भेद हैं-

(क) 15 (ख) 05

(ग) 563 (घ) 553 ( )

(j) परमाधार्मिक देव नहीं है-

(क) शबल (ख) धनुष

(ग) कुम्भ (घ) महोरग ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) सम्मूर्च्छिम मनुष्य नियमा अपर्याप्त ही काल करते हैं। ( )

(b) ऊँचे लोक में सूक्ष्म तेउकाय के भेद नहीं लिये हैं। ( )

(c) आत्मा में कर्म की निज शक्ति का कारणवश प्रकट न होना उदय है। ( )

(d) उपशम भाव 4 से 11 गुणस्थान तक रहता है। ( )

(e) आत्मारंभी-परारंभी का थोकड़ा भगवती सूत्र शतक 1, उद्देशक 1 में चलता है। ( )

(f) सिद्ध भगवान अनारम्भी ही होते हैं। ( )

(g) ज्योतिषी देव की आहारेच्छा का जघन्य काल पृथक्त्व वर्ष का है। ( )

(h) नेरियक ओज आहारी है, वे मनोभक्षी आहारी नहीं होते हैं। ( )

(i) पृथ्वीकाय से तेउकाय असंख्यात गुणा है। ( )

(j) नपुसंक वेदी में 6 लेश्या पायी जाती हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	वैक्रिय मिश्र काम योग में	(क) देव के 184 भेद	.....
(b)	व्यवहार भाषा में	(ख) मनुष्य के 172 भेद	.....
(c)	सम्यग्दृष्टि में	(ग) नारकी का 1 भेद	.....
(d)	चार लेश्यी में	(घ) तिर्यंच के 13 भेद	.....
(e)	क्षायिक समकिती में	(च) नारकी के 6 भेद	.....
(f)	सेवार्त्तक संहनन में	(छ) देव के 162 भेद	.....
(g)	अमर में	(ज) देव के 128 भेद	.....
(h)	असन्नी में	(झ) तिर्यंच के 02 भेद	.....
(I)	दो दृष्टि में	(य) मनुष्य के 86 भेद	.....
(j)	देवांगना में	(र) मनुष्य के 131 भेद	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) **8 कर्मों में उपशम मात्र मेरा ही होता है।** .....

(b) **क्षायिक और पारिणामिक भाव रूप द्विक संयोगी भाव मुझमें मिलता है।** .....

(c) **मैं अपनी आत्मा द्वारा स्वयं पाप कार्य करता हूँ।** .....

(d) **मैं आहार का प्रकार हूँ जो उत्पत्ति के प्रथम समय से लेकर शरीर पर्याप्ति के अपर्याप्त अवस्था तक होता हूँ।** .....

(e) **मेरी आहारेच्छा का जघन्य काल 28 हजार वर्ष है।** .....

(f) **मैं इच्छापूर्वक किया गया आहार हूँ।** .....

(g) **मैं क्षायिक समकित पाने के एक समय पूर्व की अवस्था हूँ।** .....

(h) **मुझमें मात्र एक योग व जीव के भेद 8 होते हैं।** .....

(I) **मुझमें जीव का भेद 1, गुणस्थान 2, योग 7 तथा लेश्या 1 पायी जाती हैं।** .....

(j) **मैं एकेन्द्रिय होते हुए भी वैक्रिय काय योग का धारक हूँ।** .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। **9x2 = (18)**

(a) **शुभ योगी को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(b) **सान्निपातिक भाव के त्रिकसंयोगी भंगों में से एक भंग लिखिए और बताइए कि यह भंग किसमें पाया जाता है ?**

.....

.....

.....

(c) **पंचसंयोगी सान्निपातिक भाव किसमें पाया जाता है ?**

.....

.....

.....

(d) **1 से 14 गुणस्थान तक पारिमाणिक भाव लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **कार्मण काय योग में जीव के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **शाश्वत में जीव में भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **अभव्य जीवों में पाये जाने वाले योग-उपयोग लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **परिहार विशुद्धि चारित्र में गुणस्थान, योग, उपयोग लिखिए।**

.....

.....

.....

(I) **पहली नारकी में जीव के भेद लिखकर कारण भी लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई-8) **8x4=(32)**

(a) **प्रमादी के भेद करते हुए उसमें आत्मारम्भी आदि की विवक्षा कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **औदयिक भाव के 1 से 7 गुणस्थान तक कितने व कौनसे भेद पाये जाते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **क्षेत्र द्वार के कोई छः बोलों में चारों गति में पाये जाने वाले जीव के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **देवों के ऐसे 85 पर्याप्त के भेद लिखिए जिनमें वैक्रिय मिश्र काय योग माना जाता है। वैक्रिय मिश्र काय योग मानने का कारण भी लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **उपशम समकित में जीव के 138 भेद कौन-कौनसे होते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **गति द्वार के आठ बोलों की अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **वेद द्वार के बोलों में बासठिया लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **परीत व अपरीत किसे कहते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(I) **ज्ञान द्वार के बोलों की अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....